संपादकीय

करुणा-सेवाभाव से सर्वोत्तम विजेता

वर्ष 1988 में सियोल ओलंपिक में पदक हासिल करने के लिए लॉरेंस लेम्यूक्स एक दशक से भी अधिक समय से प्रशिक्षण ले रहे थे। निरंतर कठिन अभ्यास कर रहे थे। आखिर वह घड़ी आ पहुंची जब लॉरेंस लेम्यूक्स का सपना साकार होने में थोड़ा-सा ही समय शेष रह गया था। लॉरेंस लेम्यूक्स के गोल्ड मेडल जीतने की प्रबल संभावना थी लेकिन जैसे ही प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हुई मौसम ने अचानक रंग बदलना शुरू कर दिया। तेज़ हवाएं चलने लगीं और शांत समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं। ऐसे में कोई भी हतोत्साहित हो सकता था लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने हार नहीं मानी और ऊंची-ऊंची लहरों के बीच निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगे। अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद लॉरेंस लेम्यूक्स ने शुरुआती बढ़त हासिल कर ली।

लेकिन ये क्या? विषम परिस्थितियों के कारण उनसे एक चूक हो गई। ऊंची-ऊंची लहरों के कारण दिशा बतलाने वाले संकेतों को देखना असंभव हो गया और लॉरेंस लेम्यूक्स एक संकेत चूक कर आगे बढ़ गए। लॉरेंस लेम्यूक्स को आगे बढ़ने से पहले उस चूके हुए संकेत तक आने के लिए विवश होना पड़ा और वहां से पुनः रेस शुरू करनी पड़ी। इस सबमें समय की कितनी बर्बादी हुई होगी और इसके कारण पदक हासिल करने के नज़दीक पहुंचना कितना मुश्किल हो गया होगा अनुमान लगाना असंभव नहीं। इस चूक और अन्य कठिनाइयों के बावजूद लॉरेंस लेम्यूक्स शानदार प्रदर्शन करते हुए दूसरे स्थान तक जा पहुंचे। उन्हें रजत पदक मिलने की पूरी संभावना नज़र आ रही थी और वे तेज़ी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। उनका उत्साह देखने लायक था। जब लॉरेंस लेम्यूक्स तेज़ी से अपनी नाव चलाते हुए सही दिशा में आगे बढ़ रहे थे तो उन्होंने देखा कि बीच समुद्र में सिंगापुर के नाविकों की एक नाव उलटी पड़ी है। एक आदमी जो बुरी तरह से घायल हो गया था पलटी हुई नाव की पैंदी को किसी तरह से जकड़े हुए पड़ा था। नाव से कुछ ही दूरी पर एक अन्य व्यक्ति बहता हुआ जा रहा था। समुद्र की स्थिति अब और भी विकराल हो चुकी थी। लॉरेंस लेम्यूक्स एक अत्यंत अनुभवी नाविक थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि सुरक्षा नौका अथवा बचाव दल के आने तक ये बहता हुआ व्यक्ति बहते-बहते दूर चला जाएगा और उलटी हुई नाव के ऊपर पड़ा व्यक्ति भी जल्दी ही समुद्र की विशाल लहरों से टकराकर नीचे गिर पड़ेगा और बहने लगेगा। लॉरेंस लेम्यूक्स के सामने दो विकल्प थे। पहला विकल्प तो ये था कि लॉरेंस लेम्यूक्स इस दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों को नज़रअंदाज़ करके अपना पूरा ध्यान केवल अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपनी नौका और रेस पर केंद्रित करते, जिसके लिए उसने वर्षों तक कड़ा परिश्रम किया था। यह स्वाभाविक भी था और इसमें असंख्य संभावनाएं और आर्थिक हित भी निहित थे। दूसरा विकल्प था दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों की मदद करना। यद्यपि उसका मुख्य लक्ष्य किसी भी क़ीमत पर प्रतिस्पर्धा जीतना था जिसके लिए उसने दिन-रात कठोर अभ्यास किया था और जिसके लिए उसके देशवासी उत्सुकतापूर्वक उसके विजयी होने की प्रतीक्षा कर रहे थे लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने बिना किसी हिचकिचाहट के फ़ौरन अपनी नाव उस दिशा में मोड़ दी जिधर उलटी हुई दुर्घटनाग्रस्त नाव समुद्र की विकराल लहरों में हिचकोले खा रही थी।

हिमालयी ग्लेशियरों पर संकट के खतरे

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से समुद्रों का नीला और हरा रंग इस सदी के अंत तक और ज्यादा नीला और हरा हो जाएगा। समुद्र का रंग इस बात पर निर्भर करता है कि पानी में मौजूद कोई भी चीज किस प्रकार सूरज की रोशनी को परावर्तित करती है।

मनुष्य की गतिविधियों से उत्पन्न जलवायु परिवर्तन से न सिर्फ ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका जैसे ठंडे स्थान संकट में हैं बल्कि हिमालय को भी खतरा है। एक नई रिपोर्ट के मुताबिक यदि ग्लोबल वार्मिंग जारी रही तो इस सदी के अंत तक हिमालय के दो-तिहाई ग्लेशियर पिघल जाएंगे। ग्लेशियरों के पिघलने से एशिया की नदियों के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होगी। ये नदियां भारत, चीन और छह अन्य देशों में रहने वाले अरबों लोगों के लिए महत्वपूर्ण संसाधन हैं। काठमांडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के वैज्ञानिक फिलिपस वेस्टर का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग ग्लेशियर युक्त ठंडे पर्वतों को एक सदी के अंदर चट्टानों में बदल देगी। हिमालय के ग्लेशियर पर्वत शृंखला आसपास रहने वाले 25 करोड़ लोगों तथा नीचे नदी घाटियों में रहने वाले करीब 1.65 अरब लोगों के लिए पानी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ग्लेशियरों की पिघलने वाली बर्फ गंगा और सिंधु जैसी प्रमुख नदियों में बाढ़ ला सकती है, जिससे फसलें बर्बाद हो सकती हैं।

हिमालय क्षेत्र को बर्फ के विशाल भंडार के कारण दुनिया का 'तीसरा ध्रुव' भी कहा जाता है। हिमालय के पर्वत लाखों वर्ष पुराने हैं लेकिन इनके ग्लेशियरों पर जलवायु परिवर्तनों का बहुत जल्दी असर पड़ता है। 1970 के दशक में ग्लोबल वार्मिंग के आगमन के बाद से ये ग्लेशियर बर्फ लगातार कम होने से ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं, ग्लोबल वार्मिंग अथवा मानव-निर्मित जलवायु परिवर्तन खनिज ईंधनों के जलने से उत्पन्न हो रहे हैं। ईंधनों के जलने से कार्बन डायऑक्साइड और मीथेन गैस जैसी ग्रीन हाउस गैसें वायुमंडल में पहुंचती हैं। अतिरिक्त कार्बन डायऑक्साइड वायुमंडल और समुद्र का तापमान बढ़ाती है। इन ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावों के अलावा इस क्षेत्र पर वायु प्रदूषण का भी असर पड़ रहा है। प्रदूषण से ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव और तीव्र हो जाता है। इससे बर्फ के पिघलने में तेजी आती है। प्रदूषित हवा समूचे एशिया में मानसून और वर्षा के पैटर्न को भी बदल रही है। ग्लेशियरों के पिघलने का असर भारत और चीन के अलावा भूटान, म्यांमार, नेपाल, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और पाकिस्तान पर पड़ेगा। हिमालय के ग्लेशियरों के बारे में यह रिपोर्ट पांच वर्ष में तैयार हुई है और इसमें 350 रिसर्चरों ने योगदान दिया है। यह पहली रिपोर्ट है, जिसमें एशिया के अरबों लोगों की खुशहाली में हिमालय क्षेत्र के महत्व और उन पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

जलवायु परिवर्तन का असर समुद्रों के रंग पर भी पड़ रहा है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से समुद्रों का नीला और हरा रंग इस सदी के अंत तक और ज्यादा नीला और हरा हो जाएगा। समुद्र का रंग इस बात पर निर्भर करता है कि पानी में मौजूद कोई भी चीज किस प्रकार सूरज की रोशनी को परावर्तित करती है। रंगों में परिवर्तन मुख्य रूप से समुद्रों में रहने वाले सूक्ष्म जीवों की आबादी पर पड़ रहे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की वजह से हो रहा है। ये जीव 'फाइटोप्लैंकटन' कहलाते हैं। ये जीव सूरज की रोशनी को फोटोसिंथेसिस (प्रकाश-संश्लेषण) के जरिए रासायनिक ऊर्जा में बदलते हैं। फाइटोप्लैंकटन में मौजूद क्लोरोफिल प्रकाश के स्पेक्ट्रम के नीले भाग को ज्यादा और हरे भाग को कम सोखता है। इससे हरी रोशनी परावर्तित होती है। अतः समुद्र के जिस हिस्से में ज्यादा फाइटोप्लैंकटन होंगे वहां हरा रंग दिखेगा। समुद्र के जिन हिस्सों में ये जीव नहीं होंगे वे नीले दिखाई देंगे। रंगों में परिवर्तन समुद्रों में पाए जाने वाले अन्य रंगीन पदार्थों के स्तर पर पड़ रहे प्रभावों से भी हो रहा है।

ब्रिटेन की साउथम्पटन यूनिवर्सिटी की रिसर्चर और इस अध्ययन की सह-लेखिका डॉ. एना हिकमैन ने कहा कि जिस प्रकार जमीन पर पौधे हरे होते हैं, उसी तरह समुद्रों में फाइटोप्लैंकटन भी हरे होते हैं। अतः फाइटोप्लैंकटन की विभिन्न किस्में और उनकी मात्रा समुद्र की सतह के रंग को प्रभावित करती है। उन्होंने कहा कि इन जीवों के स्तर में परिवर्तन का पता लगाना बहुत महत्व रखता है। फाइटोप्लैंकटन में हमारी दिलचस्पी की खास वजह यह है कि ये जीव दरअसल सूक्ष्म समुद्री पौधे हैं। दुनिया में होने वाली कुल फोटोसिंथेसिस प्रक्रिया में करीब आधा हिस्सा इन सूक्ष्म पौधों का है। ये पौधे समुद्री खाद्य नेटवर्क के आधार हैं।

हिकमैन और उनके सहयोगियों ने नेचर कम्युनिकेशंस पत्रिका में प्रकाशित अपने अध्ययन में बताया कि उन्होंने कंप्यूटर मॉडल का इस्तेमाल करके अपने निष्कर्ष निकाले हैं। यह मॉडल बताता है कि तापमान, समुद्री करेंट और समुद्री अम्लता जैसी चीजें किस प्रकार पानी के अंदर फाइटोप्लैंकटन की किस्मों और उनके विकास को प्रभावित करती हैं। रिसर्चरों ने यह भी पता लगाया कि इन परिवर्तनों का समुद्री सतह पर प्रकाश के सोखे जाने और उसके परावर्तन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। रिसर्च के नतीजों से पता चलता है कि यदि दुनिया में समुद्र की सतह के तापमान में 2100 तक 3 सेल्सियस की वृद्धि होती है तो उत्तरी एटलांटिक सहित आधे से ज्यादा समुद्रों का रंग बदल जाएगा। हिकमैन ने कहा कि जहां अभी फाइटोप्लैंकटन के कम जैवभार की वजह से समुद्र नीला है वहां आप ज्यादा नीला रंग देखेंगे। इसी प्रकार जहां अधिक जैवभार की वजह से समुद्र तुलनात्मक रूप से ज्यादा हरा है वहां आप और ज्यादा हरा रंग देखेंगे। अध्ययन के लेखकों का कहना है कि ये परिवर्तन फाइटोप्लैंकटन की आबादी में बदलाव को दर्शाते हैं। ये बदलाव ध्रुवों के निकट समुद्री बर्फ के कम होने, तापमान में वृद्धि और समुद्री जल के कम मिश्रण के कारण हो रहे हैं। हिकमैन ने कहा कि समुद्र के रंग के परिवर्तन पर नजर रख कर हम फाइटोप्लैंकटन की आबादी में होने वाले परिवर्तनों के पूर्व संकेत हासिल कर सकते हैं।

इस बीच, नेचर क्लाइमेट चेंज पत्रिका में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से उत्तरी गोलार्द्ध की झीलें अपना बर्फीला आवरण खो रही हैं। अध्ययन के अनुसार अमेरिका से लेकर जापान तक हजारों झीलें जो सर्दियों में जम जाती थीं अब तेजी से अपनी बर्फ खो रही हैं। झीलों से गायब हो रही बर्फ का उन लाखों लोगों पर असर पड़ेगा जो इन उत्तरी झीलों के आसपास रहते हैं। सर्दियों की बर्फ के अभाव में झीलें साल में जल्दी गर्म होने लगती हैं। जल की सतह गर्म होने से झील के अंदर ऑक्सीजन के स्तर में कमी आती है। पानी का तापमान बढ़ने से मछलियों की प्रजातियों पर असर पड़ता है। इससे उन मछलियों की परेशानी बढ़ जाती है जो ठंडे पानी में पनपती हैं। मनुष्य भी जमी हुई झीलों से लाभान्वित होता है। आइस फिशिंग, स्केटिंग और शरद उत्सव जैसी आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियां जमी हुई झीलों के बगैर संभव नहीं हैं।

सऊदी अरब तेल आपूर्ति के लिये भारत को क्षेत्रीय केंद्र बनाएगा

हम रिफाइनरी और वितरण तथा विपणन क्षेत्र पर भी गौर कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा, ''हम ऐसी ढांचागत सुविधा में निवेश कर रहे हैं जो भारत को पेट्रोलियम उत्पादों के आयात और निर्यात के काबिल बनाएगा।''

सऊदी अरब कच्चे तेल की आपूर्ति के लिये भारत को क्षेत्रीय केंद्र बनाने पर विचार कर रहा है और भंडारण सुविधाओं के निर्माण तथा रिफाइनरी को सुदृढ़ करने में अरबों डालर निवेश करेगा। सऊदी अरब के विदेश मंत्री अदेल बिन अहमद अल-जुबेर ने यह कहा है। दुनिया का सबसे बड़ा तेल निर्यातक सऊदी अरब यहां पेट्रालियम उत्पादों के वितरण और विपणन क्षेत्र में भी निवेश करेगा।

साथ ही भारत को पेट्रोरसायन क्षेत्र में बुनियादी ढांचा को मजबूत करने में मदद करेगा। साऊदी अरब के युवराज मोहम्मद बिन सलमान के प्रतिनिधिमंडल में शामिल विदेश मंत्री ने कहा कि उनका देश भारत को बढ़ती आर्थिक शक्ति के रूप में देखता है और उसकी आगे की वृद्धि को लेकर आशावान है।

ल जुबेर ने पिछले सप्ताह बातचीत में कहा, ''हम भारत को क्षेत्र में कच्चे तेल की आपूर्ति का केंद्र बनाने पर गौर कर रहे हैं। हम यहां भंडारण सुविधाएं बनाने पर विचार कर रहे हैं। हम रिफाइनरी और वितरण तथा विपणन क्षेत्र पर भी गौर कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा, ''हम ऐसी ढांचागत सुविधा में निवेश कर रहे हैं जो भारत को पेट्रोलियम उत्पादों के आयात और निर्यात के काबिल बनाएगा।'' साऊदी अरब ने हाल ही में यह घोषणा की कि दुनिया की सबसे बड़ी तेल निर्यातक कंपनी सऊदी अरामको महाराष्ट्र में 44 अरब डालर की लागत से संयुक्त उद्यम के तहत स्थापित होने वाली रिफाइनरी परियोजना में भागीदार होगी।

यह दुनिया की सबसे बड़ी रिफाइनरी होगी जिसका निर्माण एक बार में किया जाएगा। ल-जुबेर ने कहा, ''हम भारत की भागीदारी के साथ 44 अरब डालर की लागत सबसे बड़ा रिफाइनरी परिसर बना रहे हैं।''

उन्होंने कहा, ''हम भारत को एक बढ़ती आर्थिक शक्ति तथा एक स्थिर एवं अवसरों वाला देश के रूप में देख रहे है। इसीलिए हम भारत के साथ बेहतर और मजबूत संबंध चाहते हैं।''सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि उनका देश भारत की तेल मांग को पूरा करने को प्रतिबद्ध है तथा और कच्चा तेल बेचने को तैयार है।

अलगाववादियों की सुरक्षा और सुविधाएं छिनना सही दिशा में उठाया गया कदम

आरटीआई सूचना के अनुसार इन अलगाववादी नेताओं पर देश के खजाने से 10 करोड़ रुपए से अधिक तो सुरक्षा के नाम पर ही सालाना खर्च किए जा रहे थे। इसके अलावा होटलों का खर्चा, मंहगे ईलाज की सुविधा और दूसरे खर्चों सहित ना जाने कितनी सुविधाओं का भोग यह अलगाववादी नेता करते आए हैं।

यह पहला मौका है जब सरकार ने कश्मीर में आतंकवाद की जड़ काटने का सीधा प्रयास किया है। होता यह रहा है कि आतंकवादी गतिविधियां तेज होने पर जनआक्रोश के चलते अलगाववादी नेताओं को नजरबंद या फिर जेल में बंद कर दिया जाता रहा है। इससे उनकी गतिविधियों पर किसी तरह की रोक भी नहीं लग पाती और वे अधिक क्षमता से अलगाववाद को बढ़ावा देने में सक्रिय हो जाते हैं। मजे की बात यह कि देश की सुविधाओं का उपयोग करते हुए देश के खिलाफ खुले आम राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का संचालन करते रहे हैं। पहली बार सरकार ने अलगाववादी नेताओं पर सीधा शिकंजा कसने का कदम उठाया है। इससे पहले नजरबंदी या जेल में बंद करने जैसे कदम उठाए जाते रहे हैं जिनका इन पर इसलिए कोई असर नहीं होता था कि इनकी सुख और सुविधाओं में कोई कमी नहीं होती थी और सहानुभूति बटोरते हुए अधिक सक्रियता से अपनी गतिविधियों को अंजाम देते थे। पांच शीर्ष अलगाववादी नेताओं मीरवाइज उमर फारुख, अब्दुल गनी बट, बिलाल लोन, शब्बीर शाह और हाशिम कुरैशी पर सख्ती करते हुए सरकार द्वारा मुहैया कराई जा रही सुरक्षा और अन्य सुविधाओं को हटा दिया गया है। एक आरटीआई सूचना के अनुसार इन अलगाववादी नेताओं पर देश के खजाने से 10 करोड़ रुपए से अधिक तो सुरक्षा के नाम पर ही सालाना खर्च किए जा रहे थे। इसके अलावा होटलों का खर्चा, मंहगे ईलाज की सुविधा और दूसरे खर्चों सहित ना जाने कितनी सुविधाओं का भोग यह अलगाववादी नेता करते आए हैं। मजे की बात यह है कि यह नेता देश के खर्चे पर एक और लक्जरियस जिंदगी जी रहे हैं, ऊंचा काम धंधा कर रहे हैं, अपने बच्चों और परिजनों को अच्छी शिक्षा दिला रहे हैं वहीं कश्मीर के आम नौजवानों की जिंदगी को बर्बाद करते हुए देश में आतंकवाद और अलगाववाद को बढ़ावा दे रहे हैं। देश के साथ नमक हरामी करते हुए पाकिस्तान का गुणगान कर रहे हैं। जो सेना देश की रक्षा और कश्मीर में जनजीवन पर आने वाले हर संकट में कश्मीरियों के साथ खड़ी है उसी के खिलाफ पत्थरबाजी, नारेबाजी, दुर्व्यवहार और ना जाने कैसे कैसे राष्ट्र विरोधी कार्यों के लिए उकसाने में कमी नहीं छोड़ रहे।

यहां तक कि घुसपैठियों और आतंकवादियों के रक्षा कवच के रूप में काम कर रहे हैं। दरअसल पुलवामा की घटना के बाद जिस तरह से देश में जनाक्रोश सामने आया है यह अपने आप में समूचे देश की जनभावनाओं को प्रदर्शित करता है। देश का क्या कोई सा भी कोना हो, क्या युवा, क्या वृद्ध अपितु बच्चे भी जिस तरह से आक्रोशित और उद्वेलित हो रहे हैं वह वास्तव में राष्ट्र भक्ति का ज्वार है और यह साफ हो जाना चाहिए कि पाकिस्तान के पक्ष में या जाने अनजाने या यों कहें कि जानीमानी रणनीति के तहत आतंकवादियों के पक्ष में खड़े होने वालों के लिए भी यह सबक है। दुर्भाग्य यह है कि देश में ही अपने आप पर खतरा बताने वाले व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आए दिन सरकारी सम्मान की वापसी की हुंकार भरने वाले ना जाने किस कोने में छिप गए हैं। आखिर देश की रक्षा में रात दिन जान जोखिम में डालकर सीमाओं पर तैनात वो भी पेरा मिलिट्री फोर्स तक के जवानों के प्रति भी देश का कोई दायित्व होता है।

भाषण देना, आरोप लगाना, मानवाधिकारों की बात करना, आलोचना करना बहुत आसान है। मीडिया के सामने गाल बजाकर सुर्खियों में आना एक बात है पर कभी बेगुनाह सिपाहियों या यों कहें कि सैनिकों के पक्ष में आवाज उठाने का इन लोगों ने प्रयास किया है। बल्कि देखा जाए तो इस तरह के छद्म एजेण्डा पर काम करने वाले लोगों के खिलाफ भी अब समय आ गया है जब देशवासियों को आवाज उठानी होगी। विचारणीय है कि जो अलगाववादी नेता हैं या जो पाकिस्तानपरस्त हैं या जो घाटी में देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं और जो अपने आप को कश्मीरियों का खैरख्वाह मानते हैं उन्हें सुरक्षा मांगने की क्या जरूरत है भई।

जंगल के हकदार

वन जीवों के संरक्षण से जुड़े संगठनों की दलील रही है कि इस कानून से जंगल व वन्य जीव समाप्त हो जायेंगे। कुछ लोगों ने कानून की वैधता पर प्रश्न उठाते हुए इसके खिलाफ अदालत में दस्तक दी। इस आपाधापी में वन भूमि के वास्तविक हकदारों की आवाज को न्यायसंगत ढंग से नहीं उठाया गया।

शताब्दियों से जो जंगल को ओढ़ते-बिछाते रहे हैं, जिनकी जीवन शैली, संस्कृति और रीति-रिवाज जंगल संस्कृति से ?उपजे, उन्हें अब जंगल से बाहर करने की तैयारी है। वनपुत्रों-आदिवासियों के अलावा कुछ लोग अवश्य हो सकते हैं, जिन्होंने जंगल की जमीन का अतिक्रमण किया हो, मगर चंद ऐसे लोगों के चलते वनपुत्रों को बेदखल करना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। यदि सुप्रीम कोर्ट ने सख्ती दिखाते हुए ग्यारह लाख परिवारों की वनभूमि पर दावेदारी खारिज की है तो कहीं न कहीं वजह केंद्र सरकार द्वारा इस तबके की हकीकत को सही ढंग से अदालत के सामने न रखना ही है। इस सुनवाई से पहली वाली सुनवाई पर सरकार की ओर से किसी वकील का उपस्थित न होना केंद्र सरकार की कोताही को ही दर्शाता है। इसके चलते अब सोलह राज्यों के ग्यारह लाख परिवारों का भविष्य दांव पर लग गया है । हो सकता है कि चुनावी साल में यह मामला बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन जाये। वजह यह भी है कि शीर्ष अदालत ने कहा है कि 27 जुलाई को होने वाली? अगली सुनवाई तक जंगलों को खाली करवा लिया जाये। इनका पुनर्वास कैसे सुनिश्चित होगा, कहना कठिन है। अकसर विभिन्न बड़ी परियोजनाओं के चलते होने वाले विस्थापन के बाद ठीक से पुनर्वास न हो पाना शासन-प्रशासन की नाकामी को दर्शाता रहा है। यह एक बड़ा आंकड़ा है और यदि पहले खारिज किये गये इतने ही दावेदारों को इसमें शामिल किया जाये तो आंकड़ा एक करोड़ से भी ऊपर चला जाता है।

उत्तर पश्चिम रेलवे ई-निविदा आमंत्रण सूचना
पत्र सं.: WB-74-W-O/Works/ दिनांक: 22.02.2019
मंडल रेल प्रबन्धक, इंजीनियरिंग, उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से ई-निविदा के माध्यम से प्रचलित नियमों के अन्तर्गत निर्धारित प्रपत्रों में निविदा निम्न कार्यों के लिए क्रमानुसार आमंत्रित की जाती है- ई-निविदा सूचना सं. 2018-19/181: कार्य का नाम व स्थान : Strengthening of loops line by manual deep screening, renewal of glued joints, SEJs, distressing etc. from Sambhar to REN stations in Phulera-Jodhpur section under ADEN/Degana of Jodhpur division. अनुमानित लागत रुपये : Rs. 9613776.77. बयाने की राशि रुपये : Rs. 192300.00. निविदा प्रस्तुत करने की तिथि : 18.03.2019. ई-निविदा सूचना सं. 2018-19/182: कार्य का नाम व स्थान : Strengthening of loops Lines by manual deep screening, renewal of glued joints, SEJs, distressing etc. og Kheduli-Umed & Merta Road-Bikaner section in jurisdiction of ADEN/Merta Road of Jodhpur division. अनुमानित लागत रुपये : Rs. 5510090.02. बयाने की राशि रुपये : Rs. 110200.00. निविदा प्रस्तुत करने की तिथि : 18.03.2019. ई-निविदा सूचना सं. 2018-19/183: कार्य का नाम व स्थान: Repair to staff quarter, road & sewerage system at Gotan station railway colony under ADEN/Merta Road sub division. अनुमानित लागत रुपये : Rs. 2659337.09. बयाने की राशि रुपये : Rs. 53200.00. निविदा प्रस्तुत करने की तिथि : 18.03.2019. ई-निविदा सूचना सं. 2018-19/184: कार्य का नाम व स्थान : Provision of separate water supply network for sweet and salty water, pipeline network, tubewell & Other Misc. work at Merta Road railway colony under ADEN/Merta Road of Jodhpur Division. अनुमानित लागत रुपये : Rs. 13882460.08 बयाने की राशि रुपये : Rs. 219400.00 निविदा प्रस्तुत करने की तिथि : 18.03.2019. ई-निविदा सूचना सं. 2018-19/185: कार्य का नाम व स्थान : Provision of constructing 1 no. 225KL & 2 no. 110KL capacity RCC Over Head Tank & Under Ground Hauze at Nagour, Merta road, i.c with separate water supply network for sweet and salty water under ADEN/Merta Road sub division. अनुमानित लागत रुपये : Rs. 6932024.00 बयाने की राशि रुपये : Rs. 138700.00 निविदा प्रस्तुत करने की तिथि : 18.03.2019. वेबसाईट का विवरण जहाँ पर ई-निविदा देखी व भरी जा सकती है। : www.ireps.gov.in
168-AD/19
हमें /NWRailways पर फॉलो करें

उत्तर पश्चिम रेलवे
ई-निविदा सूचना
भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर कैरिज अजमेर द्वारा खुली ई-निविदा संख्या : कैरिज-05-2019 दिनांक 22.02.2019 आमंत्रित की जाती हैं। कोई भी मैन्युअल टेंडर स्वीकार नहीं किया जायेगा और यदि काई मैन्युअल टेंडर प्राप्त होता है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा। **कार्य का नाम एवं स्थान** : कैरिज कारखाने अजमेर में रोलर बियरिंग तथा प्राइमरी सस्पेंशन के कंपोनेंट्स की सफाई तथा व्हील शिफ्टिंग का कार्य (स्कोप ऑफ वर्क अनुसार) **अनुमानित लागत** : रू 5459982.72/- **टेण्डर डॉक्यूमेंट कॉस्ट** : रू. 5000.00 **बयाना राशि** : रू 109200.00 **ई-टेंडर फॉर्म जमा करने का समय व तारीख** : दिनांक 29.03.19 समय 15.00 बजे तक **वेबसाइट का विवरण** : www.ireps.gov.in **पात्रता मानदंड** : लागु है। **नोट** : टेंडर डॉक्यूमेंट कॉस्ट एवं बयाना राशि केवल IREPS की वेबसाइट पर उपलब्ध पेमेंट गेटवे सुविधा द्वारा ऑनलाइन जमा किये जाने है।
167-AL/19
रेल सुरक्षा संबंधी शिकायत हेतु हैल्पलाइन नं. 182 पर सम्पर्क करें

संपादक-चुनीलाल एस. भट्ट, मुद्रक एवं प्रकाशक-मयुर सी. भट्ट, प्रकाशन स्थल-201, 202, 208 नंदन कोम्पलेक्ष, मीठाखली, अहमदाबाद-6. मालिक-कल्याणी पब्लिकेशन प्रा.लि. द्वारा महादेव ऑफसेट, एच-47, रवि एस्टेट, रूस्तम मिल कम्पाउंड, दूधेश्वर, अहमदाबाद में छपवाकर प्रकाशित किया।
फोन-26568477, 26409779.
E : alpaviram1@yahoo.com

हॉन्ग कॉन्ग में बना योग में पहला ऐतिहासिक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

हॉन्ग कॉन्ग, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की योग दिवस की पहल को अगले स्तर तक ले जाते हुए, हॉन्ग कॉन्ग और चीन के लिए बीजेपी के प्रवासी अध्यक्ष, सोहन गोयनका ने योग में जापान ऑक्शन हाउस गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड आयोजित किया । हॉन्ग कॉन्ग के इतिहास में अपनी तरह का पहला रिकॉर्ड; जहाँ 1011 से अधिक योग प्रैक्टिशनर ने 24 फरवरी को हॉन्ग कॉन्ग के सन यात सेन मेमोरियल पार्क में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए एक ही स्थान पर 3 मिनट के लिए वीरभद्रसन (वॉरिअर 2 पोज़) किया। इससे पहले यह गिनीस वर्ल्ड रिकॉर्ड 387 योग प्रैक्टिशनर के नाम दर्ज था

वर्ल्ड स्पोर्ट्स योग फेडरेशन, संचालक, सोहन गोयनका ने कहा, पीएम नरेंद्र मोदी की सराहनीय पहल में योगदान करने का लक्ष्य रखते हुए, हम पूरी दुनिया को योग के एकजुट करने की शक्ति को समझाना चाहते हैं।

सोहन गोयनका, अध्यक्ष, ओएफबीजेपी (हॉन्ग कॉन्ग और चीन), पैट्रन, वर्ल्ड स्पोर्ट्स योग फेडरेशन और चेयरमैन यूनरिच ज्वैलरी लिमिटेड ने मुख्य अतिथि और अनूप कुमार अग्रवाल (अध्यक्ष जापान ऑक्शन हाउस) ने सम्मानीय अतिथि के रूप में इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में भाग लिया। (19-8)

राष्ट्रपति ने किया अपोलो मेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का शुभारंभ

लखनऊ, देश के प्रमुख स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में से एक, अपोलो हॉस्पिटल्स ने मेडिक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के साथ मिलकर शहर में अत्यधिक सुविधा प्रदान करने हेतु 330 बेड से लैस अपोलो मेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का शुभारम्भ किया। भारत के राष्टपति महामहिम श्री राम नाथ कोविंद द्वारा कानपुर रोड स्थित अपोलोमेडिक्स हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया। इस उपलक्ष में गृह मंत्री राजनाथ सिंह,कैबिनेट मंत्री श्री बृजेश पाठक और कैबिनेट मंत्री, रीता बहुगुणा जोशी, राज्यपाल श्री राम नाईक व उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा भी मौजूद रहे। इस अवसर पर अपोलो ग्रुप के फाउंडर चेयरमेन डॉ. प्रताप सी रेड्डी और अपोलोमेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के संस्थापक और सह-अध्यक्ष डॉ. सुशील गट्टानी भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

राष्टपति रामनाथ कोविंद ने पुलवामा के शहीदों को नमन करते हुए कहा कि लखनऊ कहा कि लखनऊ में कई राष्टीय और अंतराष्टीय चिकित्सा केंद्र है ऐसे में 300 बेड वाले ये हॉस्पिटल में राजधानी के लिए एक अनूठी सौगात है। देश चिकित्सा के क्षेत्र में काफी प्रगति कर रहा है.आज पीएम मोदी जी नीतियों में चिकित्सा क्षेत्र में काफी सराहनीय तरक्की की है। आयुष्मान योजना के तहत आज गरीबो को काफी लाभ मिला पहले उसे अपने उपचार के लिए अपनी ज़मीन भी बेचनी पद जाती थी मगर आज ऐसा नहीं है। (1)

भारतीय गैस उद्योग के विकास में मौके और चुनौतियां; डेविड कैरोल, प्रेसिडेंट, आईजीयू और सीईओ जीटीआई

नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी में आज एक दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका विषय था, भारत में प्राकृतिक गैस उद्योग = भारतीय गैस उद्योग में मौके और चुनौतियां। यह आयोजन पीडीपीयू-जीटीआई भारतीय गैस उद्योग के साथ मिलकर किया गया। इसमें इस क्षेत्र के जाने-माने वक्ताओं ने उद्योग की मौजूदा स्थिति की समीक्षा की और उसपर प्रकाश डाला।

यह कार्यशाला 2017 में व्यक्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इच्छा का परिणाम थी। उस समय उन्होंने कहा था कि भारत में प्राकृतिक गैस के विकास के लिए वे चाहेंगे कि गैस टेक्नालॉजी इंस्टीट्यूट, इलिनोइस और पंडित दीन दयाल उपाध्याय पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी (पीडीपीयू), गांधीनगर के बीच एक गठजोड़ की शुरुआत की जाए।

इस सिलसिले में पीडीपीयू ने अप्रैल 2018 में एक ओपन हाउस का आयोजन किया था। इसमें चर्चा का विषय था, इंडिया टुवार्ड्स गैस बेस्ड इकनोमी (भारत गैस आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में)। इसमें डेविड कैरोल, प्रेसिडेंट, आईजीयू और सीईओ जीटीआई ने मौजूद लोगों को संबोधित किया था और भारत के प्राकृतिक गैस क्षेत्र के विकास के लिए अपने विचार तथा दृष्टिकोण साझा किए थे। इस कदम को आगे बढ़ाते हुए, पीडीपीयू और जीटीआई ने अब इस कार्यशाला का आयोजन किया है। (22-1)

राष्ट्रपति ने लखनऊ में अपोलेमेडिक्स सुपर स्पेशिएलिटि अस्पताल का उद्घाटन किया

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने देश में विशेषकर उत्तर प्रदेश में गुणवत्ता संपन्न तथा किफायती स्वास्थ्य सेवा के महत्व पर बल दिया। उन्होंने परंपरागत संक्रामक और संक्रमणकारी बीमारियों की चुनौतियों में सफलता की चर्चा की और कहा कि देश में बीमारियों के तौरतीरके बदल रहे हैं, जिससे गैर संक्रमणकारी और जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों हो रही है। राष्ट्रपति ने इस संदर्भ में 2018 में लांच किए गए आयुष्मान भारत कार्यक्रम का जिक्र किया और कहा कि यह कार्यक्रम लोगों विशेषकर वंचित नागरिकों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराए। राष्ट्रपति ने कहा कि सभी के लिए गुणवत्ता संपन्न स्वास्थ्य साझा लक्ष्य है। इसलिए उन्हें प्रसन्नता है कि सरकार सिविल सोसायटी निजी और धर्मादा संगठन तथा अन्य हितधारक मिलजुलकर काम कर रहे हैं।

प्रयागराज में 'स्वच्छ कुंभ, स्वच्छ आभार' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

तपोभूमि प्रयागराज और सभी प्रयागवासियों को मेरा आदरपूर्वक प्रणाम। प्रयाग की भूमि पर एक बार फिर आकर मैं अपने-आप में धन्य महसूस कर रहा हूं। पिछली बार जब मैं यहां आया था तब मुझे कुंभ मेला में आकर पवित्र गंगा-यमुना एवं सरस्वती के तट पर पूजा करने, पवित्र अक्षयवट के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस बार संगम में पवित्र स्नान करने और पूजा करने का परम सौभाग्य मुझे मिला है।

साथियो, प्रयागराज का तप और तप के साथ इस नगरी का युगों पुराना नाता रहा है। पिछले कुछ महीनों से करोड़ों लोग यहां तप, ध्यान और साधना कर रहे हैं। प्रयागराज के कण-कण में तप का असर हर कोई अनुभव कर सकता है। कुंभ में हठयोगी भी हैं, तपयोगी भी हैं, मंत्रयोगी भी हैं और इन्हीं के बीच ये कर्मठ मेरे कर्मयोगी भी हैं। ये कर्मयोगी मेले की व्यवस्था में लगे वो लोग हैं, जिन्होंने दिन-रात मेहनत कर श्रद्धालुओं को तमाम सुविधाएं मुहैया कराई हैं।

मैं एनडीआरएफ के हमारे साथीभाई राजेंद्र गौतम को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने श्रद्धालुओं के जीवन को बचाने के लिए अपने जीवन को दांव पर लगा दिया। मैं उनके परिवार के प्रति भी अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। इन कर्मयोगियों में वो नाविक भी हैं, जिन्होंने मां गंगा की साधना करने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुंचाया। इन कर्मयोगियों में प्रयागराज के स्थानीय निवासी भी शामिल हैं, जिनकी तपस्या मेला शुरू होने से महीनों पहले ही शुरू हो गई थी।

साथियो, कुंभ के कर्मयोगियों में साफ-सफाई से जुड़े कर्मचारी और स्वच्छाग्रही भी शामिल हैं, जिन्होंने अपने प्रयासों से कुंभ के विशाल क्षेत्र में हो रही साफ-सफाई को पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना दिया। जिस जगह पर बीते पांच-छह हफ्ते में 20-22 करोड़ से ज्यादा लोग जुटे हों, वहां की अस्थाई व्यवस्थाओं में सफाई की व्यवस्था करना बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। मेरे साथियो, आपने साबित कर दिया है कि दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं है।

भाइयो और बहनों, अब से कुछ देन पहले मुझे ऐसे ही कर्मयोगियों से मिलने का अवसर मिला। ये साफ-सफाई करने वाले मेरे वो भाई-बहन थे, जो बीते कई हफ्तों से मेला क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारी संभाल रहे थे। सुबह बहुत जल्दी उठना, रात में बहुत देर से सोना, दिन भर कूड़ा उठाना, गंदगी साफ करना, शौचालय साफ करना; इसी काम में वो लगे रहते थे। ये बिना किसी प्रशंसा के, बिना किसी की नजर में आए, चुपचाप अपना काम कर रहे थे, लेकिन इन कर्मयोगियों की, स्वच्छताग्रहियों की मेहनत का पता मुझे दिल्ली में लगातार मिलता रहता था। जितने भी लोगों से मेरी मुलाकात हुई, मीडिया में भी मैंने अक्सर देखा कि लोग कुंभ में स्वच्छता की इस बार भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं। इस प्रशंसा के असली हकदार आप लोग हैं, सफाई के काम में जुटे मेरे भाई-बहन हैं।

भाइयो और बहनों, हर व्यक्ति के जीवन में अनेक ऐसे पल आते हैं जो उसे गढ़ते हैं, बनाते हैं; इनमें से बहुत से पल बहुत यादगार होते हैं, अविस्मरणीय होते हैं। आज मेरे लिए भी ऐसा ही पल है। आज जिन सफाईकर्मी भाइयों और बहनों के चरण धोकर मैंने वंदना की है, वो पल मेरे साथ जीवनभर रहेगा। उनका आशीर्वाद, उनका स्नेह, आप सभी का आशीर्वाद, आप सभी का स्नेह मुझ पर ऐसे ही बना रहे, ऐसे ही मैं आपकी सेवा करता रहूं, यही मेरी कामना है।

साथियो, दिव्य कुंभ को भव्य कुंभ बनाने में आपने वाकई कोई कसर नहीं छोड़ी। जिस मेला क्षेत्र में 20 हजार से ज्यादा कूड़ेदान हों, एक लाख से अधिक शौचालय हों; वहां किस तरह मेरे सफाईकर्मी भाई-बहनों ने काम किया है, उसका अंदाजा भी कोई नहीं लगा सकता। लेकिन ये उन्हीं का परिश्रम था कि इस बार कुंभ की पहचान स्वच्छ कुंभ के तौर पर हुई। इतनी बड़ी व्यवस्था को संभालने के लिए और सही से चलाने के लिए स्वच्छता से जुड़े प्रत्येक सफाई कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है। आपके इस योगदान के लिए स्वच्छ सेवा सम्मान कोष की भी आज घोषणा की गई है। इस कोष से इस कुंभ मेले में जिन्होंने काम किया है, इस कोष से आपको और आपके परिवार को विशेष परिस्थितियों में मदद सुनिश्चित हो पाएगी। ये एक प्रकार से देशवासियों की तरफ से आपकी इस सेवा के प्रति एक स्नेह है, ये आभार है।

साथियो, स्वच्छ कुंभ ऐसे समय में हो रहा है जब देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मना रहा है। गांधीजी ने तो करीब 100 वर्ष पहले खुद स्वच्छ कुंभ की इच्छा जताई थी, जब वो हरिद्वार कुंभ में गए थे। देशवासियों के सहयोग से स्वच्छ भारत अभियान अपने तय लक्ष्यों पर तेजी से बढ़ रहा है। इस साल 2 अक्तूबर से पहले पूरा देश खुद को खुले में शौच ये मुक्त घोषित करने की तरफ आगे बढ़ रहा है। और मै समझता हूं प्रयागराज के आप सभीस्वच्छाग्रही पूरे देश के लिए बड़ी प्रेरणा बनकर सामने आए हैं।

भाइयो और बहनों, साफ-सफाई की जब बात आती है तो इस बार कुंभ आने वालों में मां गंगे की निर्मलता को लेकर भी खासी चर्चा है। बीते एक-डेढ़ महीने से तो मैं सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों के अनुभव जान रहा था, आज इसका अनुभव मैंने खुद ने किया है। मैं पहले भी प्रयागराज आता रहा, लेकिन इतनी निर्मलता गंगाजल में पहले नहीं देखी।

साथियो, गंगाजी की ये निर्मलता नमामि गंगे मिशन की दिशा और सार्थक प्रयासों का भी उदाहरण है। इस अभियान के तहत प्रयागराज गंगा में गिरने वाले 32 नाले बंद कराए गए हैं, सीवर ट्रीटमेंट प्लांट के माध्यम से गंगा नदी में प्रदूषित जल को साफ करने के बाद ही प्रवाहित किया गया।

साथियो, इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। नमामि गंगे के लिए अनेक स्वच्छाग्रही तो योगदान दे ही रहे हैं, आर्थिक रूप से भी मदद कर रहे हैं। दो दिन पूर्व मैंने भी इसमें छोटा-सा योगदान दिया है। सियोल पीस प्राइज के तौर पर मुझे वहां जो राशि मिली, धन मिला; करीब-करीब एक करोड़ 30 लाख रुपये जितनी राशि मुझे मिली, उस राशि को मैंने अपने पास नहीं रखा, मेरे लिए नहीं रखा; वो मैंने नमामि गंगे मिशन के लिए समर्पित कर दिया। बीते साढ़े चार वर्षों में प्रधानमंत्री के नाते मुझे जो उपहार मिले हैं, उनकी नीलामी करके भी जो कुछ मुझे मिला है, वो भी मैंने मां गंगा की सेवा में समर्पित कर दिया है।

साथियो, मां गंगा के समर्पित प्रहरी हमारे नाविक भी हैं। प्रयागराज और नाविकों का तो पुराना सम्बन्ध है। बिना नाविकों के तो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की रामायण भी पूरी नहीं होती है। जो दुनिया को पार लगाते हैं उनकी नैया तो हमारे नाविक साथियों ने ही पार लगाई थी। मेरा और आपका भी आपस में गहरा रिश्ता है। आप खुद को भगवान राम का सेवक मानते हैं और मैं खुद को आपका प्रधान सेवक मानता हूं। आप खुद को गंगा-पुत्र मानते हैं और मैं मां गंगा के बुलावे पर आपकी सेवा में लगा हुआ हूं। अब बताइए- हुआ न मेरा आपसे गहरा नाता। आप जिस निष्ठा से कुंभ आने वाले श्रद्धालुओं का ध्यान रख रहे हैं, उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं; वो प्रशंसनीय है। आपके बिना इतनी बड़ी व्यवस्था को संभालना बहुत मुश्किल था। मैं एक बार फिर अपने नाविक भाइयों को भी आदरपूर्वक नमन करता हूं।

भाइयो और बहनों, इस कुंभ में वाकई बहुत से काम पहली बार हुए हैं। पहली बार श्रद्धालुओं को संगम स्नान के साथ अक्षयवट के दर्शन का भी मौका मिला। आजादी के बाद से अक्षयवट को हमेशा किले में बंद रखा जाता था। इस बार सरकार ने अक्षयवट और श्रद्धालुओं के बीच की दूरी को खत्म कर दिया। मुझे बताया गया है कि प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु अक्षयवट और सरस्वती कुंभ के दर्शन कर पाए हैं।

भाइयो और बहनों, पिछली बार में जब मैं यहां आया था तो मैंने कहा था, इस बार का कुंभ अध्यात्म, आस्था और आधुनिकता की त्रिवेणी बनेगा। आज मुझे बहुत खुशी हो रही है कि आप सभी ने अपनी तपस्या से इस विचार को साकार किया है। तपस्या के क्षेत्र को तकनीक से जोड़कर जो अद्भुत संगम बनाया गया, उसने भी सभी का ध्यान खींचा है। एक प्रकार से ये कुंभ मेला डिजिटल कुंभ के रूप में भी याद किया जाएगा।

साथियो, प्रयागराज की कृपा, साधु-संतों के आशीर्वाद, चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था और आप सभी के अनुशासन के कारण मेला सुरक्षित और शांतिपूर्ण तरीके से चला है। मैं देखता रहता हूं कि कुंभ में यूपी पुलिस ने जो भूमिका निभाई है, उसकी भी तारीफ चारों तरफ हो रही है। आपका खोया-पाया विभाग तो बच्चे, बड़े, बुजुर्गों को भी अपनो से मिला देता है और कुछ ही घंटों में मिला देता था, लेकिन अगर किसी का टेलीफोन भी खो गया, मोबाइल खो गया-उसको ढूंढना; किसी का सामान खो गया- उसको ढूंढना; ऐसे कठिन काम भी आप लोगों ने गंभीरता से किए हैं।इसके लिए सुरक्षा के जवान भी अनेक-अनेक अभिनंदन के अधिकारी हैं, बहुत-बहुत बधाई के अधिकारी हैं।

मुझे एहसास है कि कुंभ के दौरान अनेक मौके ऐसे आए होंगे, जब आप बहुत थक गए होंगे, आराम करने का समय नहीं मिला होगा, लेकिन आपने अपनी तकलीफों को भूलकर कुंभ की सफलता को ऊपर रखा।मुझे यह भी बताया गया है कि कुंभ मेला क्षेत्र में आठ हजार से ज्यादा सेवामित्रों ने भी दिन-रात एक होकर काम किया है।

साथियो, प्रयागराज में जब कुंभ लगता है तो सारा प्रयाग ही कुंभ हो जाता है। प्रयागराज के निवासी भी श्रद्धेय हो जाते हैं। प्रयागराज को एक खूबसूरत शहर के रूप में विकसित करने में और कुंभ के सफल आयोजन में प्रयागवासियों की भूमिका ने भी पूरे देश को प्रेरणा दी है।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में पीएम-किसान योजना और अन्य पहलों के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

मंच पर उपस्थित सभी महानुभव और यहां गोरखपुर में भारी संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे किसान भाईयो और बहनों.... तकनीक के माध्यम से देश भर से जुड़े किसान भाईयो और बहनों का मैं आपका हृदय से फिर एक बार अभिवादन करता हूं।

आपको खुशी होगी आज गोरखनाथ के इस कार्यक्रम से, इस स्थान के कार्यक्रम से, गोरखपुर की धरती से, हिन्दुस्तान के दो लाख गांवों के ष्थ्द्ध-द्वश्ठ ह्यद्गह्ल1द्बष्ट्र ष्द्गठ्ठह्लह्लद्ग में सैंकड़ों किसान इकट्ठे हुए हैं और इस अवसर के वे भी भागीदार बने हैं।

साथियों, बाबा गोरखनाथ की धरती पर आप सभी के बीच मुझे अनेक बार आने का सौभाग्य मिला है लेकिन आज का दिन देश के इतिहास में दर्ज होने जा रहा है। आज का दिवस सामान्य दिवस नहीं है। लाल बहादुर शास्त्री जी ने जय जवान जय किसान कहा था। उसी मंत्र को आज इतने सालों के बाद किसान के खेत तक, किसान के घर तक, किसान की जेब तक अगर उतारने का काम हो रहा है तो आज के इस पवित्र दिवस पर हो रहा है।

आजादी के बाद किसानों से जुड़ी ये सबसे बड़ी योजना आज उत्तर प्रदेश की पवित्र धरती से मेरे देश के करोड़ों-करोड़ों किसान भाईयो बहनों के आशीर्वाद से आरंभ हो रही है। मैं गोरखपुर के लोगों को तो दोहरी बधाई देता हूं क्योंकि वो प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की शुरुआत के साक्षात गवाह बन रहे हैं।

भाईयो और बहनों, आज ही गोरखपुर और पूर्वांचल के विकास से जुड़ी लगभग 10 हजार करोड़ रुपयों की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास भी किया गया है। 10 हजार करोड़ रुपया.... स्वास्थ्य,सड़क, रेल, रोजगार, गैस जैसे क्षेत्रों से जुड़ी ये तमाम परियोजनाएं इस क्षेत्र के जीवन को आसान बनाने वाली हैं। इसके लिए गोरखपुर सहित पूर्वांचल को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

भाईयो और बहनों, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के शुभारंभ के अवसर पर मैं देश भर के करोड़ों किसान परिवार को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके अलावा करोड़ो पशुपालकों दुध के व्यवसाय से जुड़े किसान परिवारों और मतस्य पालन... मछली पालन और उसके व्यवसाय से जुड़े बहन भाईयों को भी किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा से जुड़ने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

साथियों, किसानों के लिए पहले की सरकारों ने बातें तो बहुत की, कागज पर योजनाएं भी बनाईं लेकिन उनकी मंशा किसान को सशक्त करने की नहीं बल्कि किसान को छोटी-छोटी चीज के लिए लगातार तरसाने की थी उनमें किसान का भला करने की नियत नहीं थी इसलिए वो किसानों के लिए कभी भी सही निर्णय नहीं ले सकते थे।

भाईयो और बहनों इसी स्थिति को बदलने के लिए आपने 2014 में भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई में एनडीए की सरकार बनाने का अवसर दिया। हमनें किसान की छोटी-छोटी दिक्कतों पर ध्यान देने के साथ ही उनकी चुनौतियों के सम्पूर्ण निवारण पर भी काम किया है। किसान पूरी तरह से सशक्त और सक्षम बनें इस लक्ष्य के साथ हम निकले हैं। हमारी सरकार बहुत ईमानदारी से कोशिश कर रही है कि देश के किसानों को हर वो साधन, संसाधन दिए जाए जिससे वो वर्ष 2022 तक अपनी आय दोगुनी कर सके।

साथियों, बीते साढ़े चार वर्षों के अपने प्रयासों को और मजबूती की इस कड़ी में किसानों को सीधी मदद देने के लिए पीएम किसान सम्मान निधि आज उत्तर प्रदेश की पवित्र धरती से देश के करोड़ों किसानों के चरणों में अर्पित करता हूं। अब से कुछ मिनट पहले देश के एक करोड़ एक लाख किसानों के खातों में इस योजना की पहली किस्त ट्रांसफर करने का सौभाग्य मुझे मिला जिसको आपने तालियों के बाजे-गाजे के साथ उसका स्वागत किया है।

मुझे बताया गया है कि देश के 21 राज्यों केंद्र शासित प्रदेशों के किसान इसमें शामिल हैं। इन किसानों को 2021 करोड़ रुपए अभी सीधे ट्रांसफर हो चुके हैं। बाकि किसानों को भी इसी तरह पहली किस्त के 2000 रुपए अगले कुछ हफ्तों में भी मिल जाएंगे और देश में करीब-करीब 12 करोड़ किसानों के खाते में दो-दो हजार की पहली किस्त जमा होगी।

भाईयो और बहनों और मैं आपको ये बता दूं ये तो अभी शुरुआत है, इस योजना के तहत हर वर्ष लगभग 75 हजार करोड़ रुपये किसानों के खाते में सीधा पहुंचने वाले हैं। देश के वो 12 करोड़ छोटे किसान जिसके पास 5 एकड़ या उससे कम भूमि है ऐसे सभी किसानों को इस योजना का सीधा लाभ मिलेगा। अब किसानों को बीज खरीदने के लिए, खाद खरीदने के लिए, दवा खरीदने के लिए, बिजली का बिल भरने के लिए, खेती से जुड़ी ऐसी अनेक जरूरतों के लिए परेशान नहीं होना होगा।

केंद्र सरकार हर साल जो छ- हजार रुपये सीधे आपके बैंक खाते में ट्रांसफर करेगी उससे जरूरत के सारे काम कर सकते हैं। इसी काम के लिए दो हजार रुपये की पहली किस्त आज अनेक किसानों के खाते में जमा की गई है। इनमें से कुछ किसानों को थोड़ी देर पहले Certificate भी दिए गए हैं। मैं फिर कहूंगा जिन किसानों को आज पहली किस्त नहीं मिली है उन्हें आने वाले कुछ ही समय में, कुछ ही हफ्तों में पहली किस्त की राशि उनके बैंक खाते में जमा हो जाएगी।

भाईयो और बहनों, पीएम किसान सम्मान निधि के तहत जो पैसे किसानों को दिए जाएंगे उसकी पाई-पाई केंद्र में बैठी हुई मोदी सरकार की तरफ से दी जाएगी। राज्य सरकारों को कुछ नहीं करना है। बस ईमानदारी से अपने-अपने राज्य के किसानों की सही सूची बनाना है। और वो लिस्ट तुरंत हमको पहुंचाना है। अगर जितनी जल्दी सूची आ जाएगी और मैं उत्तर प्रदेश सरकार का, बिहार सरकार का, गुजरात सरकार का, महाराष्ट्र सरकार का, उत्तराखंड की सरकार का ऐसी कई सरकारों का हृदय से अभिनंदन करता हूं... कि उन्होंने इस काम को प्राथमिकता दी लेकिन ऐसी भी कुछ राज्य सरकारें हैं जिनकी नींद अभी खुली नहीं है... उनको लगता है कि इस पर वो राजनीति करने जाएंगे।

सोनी पेश कर रहे है नया वायरलेस नौईज कैन्सलिंग नेकबैन्ड हेडफोन्स

नई दिल्ली, मंत्रमुग्ध करनेवाले श्राव्यानुभव को अधिक ऊंचाई पर ले जाते हुए सोनी ने आज अपनें वायरलेस नौईज कैन्सेलिंग हेडफोन्स परिवार में नवीनतम WI-C600N नेकबैन्ड हेडफोन्स का समावेश किया। अब लंबी वायरें नहीं, बहुत ज्यादा आवाज नहीं, WI-C600N हेडफोन्स हररोज की यात्रा के लिए विशेष बनाये गये है और WI-C600N में सर्वोत्तम वायरलेस आवाज गुणवत्ता एवं नौईज कैन्सेलिंग विशेषताओं का समावेश है। इस के वन पुश आर्टिफिशियल इंटेलिजंस नौईज-कैन्सेलिंग (AINC) के साथ डिजिटल नौईज कैन्सेलेशन आप को आप औन-दि-मूव होते समय बाकी कुछ नहीं, लेकिन केवल आपको अपना संगीत सुनाता है।

वायरलेस नौईज कैन्सेलेशन के साथ बिना किसी रूकावट म्युजिक का मजा लेने के लिए एम्बियंट साऊंड मोड यात्रा हो या भीड से भरी ट्रेन या लंबी बस यात्रा, सोनी की नौईज कैन्सेलिंग प्रौद्योगिकी अच्छी यात्रा प्रदान करने के लिए आपके इर्दगिर्द होनेवाली आवाज को दूर करती है। बाहर के दुनिया की गडबड को दूर करके WI-C600N के साथ आप कभी एक बीट भी मिस नहीं करेंगे और अपनें पसंदीदा संगीत का आनंद ले सकेंगे। एम्बियंट साऊंड मोड के साथ आप आपके इर्दगिर्द होनेवाला आवाज सही मात्रा में सुन सकते है, जिससे आप अपना पसंदीदा संगीत सुनते हुए भी आपके इर्दगिर्द के वातावरण के बारे में सतर्क रह सकते है। आप केवल एक बटन दबाकर बिल्कुल आसानी से नौईज कैन्सेलिंग और एम्बियन्ट साऊंड मोड में स्विच कर सकते है। (19-1)

प्रधानमंत्री ने प्रयागराज में स्वच्छ कुंभ, स्वच्छ आभार कार्यक्रम को संबोधित किया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज प्रयागराज में स्वच्छ कुंभ, स्वच्छ आभार कार्यक्रम को संबोधित किया।

वह प्रयागराज में पवित्र संगम के जल में डुबकी लगाने के बाद, और एक स्वच्छ कुंभ सुनिश्चित करने के चुनिंदा स्वच्छता कार्यकर्ताओं के उनके प्रयासों के सम्मान के रूप में, चरण वंदना करने के बाद मंच पर पहुंचे।

उन्होंने उन सभी लोगों का कर्म-योगियों के रूप में उल्लेख किया, जो कुंभ के लिए प्रयागराज में एकत्रित होने वाले भक्तों के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था सुनिश्चित करने में शामिल रहे हैं। इस संदर्भ में, उन्होंने एनडीआरएफ, नाविकों, स्थानीय लोगों और स्वच्छता कर्मियों का भी उल्लेख किया। यह उल्लेख करते हुए कि पिछले कुछ सप्ताहों में 21 करोड़ से अधिक लोगों ने कुंभ का दौरा किया है, उन्होंने कहा कि स्वच्छता कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शित किया है कि कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि इस साल कुंभ को मिली सराहना के वे सबसे सुपात्र हैं। उन्होंने कहा कि वह क्षण, जब उन्होंने कुछ सफाई कर्मचारियों की चरण वंदना की, उनके स्मरण में हमेशा बने रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज घोषित स्वच्छ सेवा सम्मान कोष स्वच्छता कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की जरूरत के समय मदद करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि देश इस वर्ष 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती से पहले खुले में शौच मुक्त बनने की ओर बढ़ रहा है।

नरेन्द्र मोदी ने कहा कि गंगा नदी की स्वच्छता इस वर्ष भी बहुत चर्चा का विषय रही है। उन्होंने कहा कि आज, उन्होंने इसे पहली बार इसका अनुभव किया है। उन्होंने कहा कि यह नमामि गंगे और केंद्र सरकार के प्रयासों का भी परिणाम है। उन्होंने कहा कि नदी में गिरने वाले नालों को अवरुद्ध किया जा रहा है, और सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले, उन्हें सियोल शांति पुरस्कार मिला, जिसमें लगभग 1.30 करोड़ रूपये की राशि शामिल थी। उन्होंने कहा कि उन्होंने उस राशि को नमामि गंगे मिशन के लिए दान कर दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें मिले उपहार और स्मृति चिन्ह भी नीलाम कर दिए गए हैं, और उनकी आय भी नमामि गंगे मिशन को दे दी गई है।

प्रधानमंत्री ने कुंभ से जुड़े नाविकों की भी विशेष रूप से प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि आजादी के बाद पहली बार, कुंभ के लिए आने वाले तीर्थयात्रियों को अक्षय वट की यात्रा करने का मौका मिला।

प्रधानमंत्री ने वहां उपस्थित सभी व्यक्तियों को कुंभ के अपने विजन, जो आध्यात्मिकता, विश्वास और आधुनिकता का मिश्रण था, को पूरा करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बारे में उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा निभाई जा रही भूमिका की भी सराहना की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस वर्ष कुंभ के लिए की गई व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे का विकास शामिल है, जो कि कुंभ मेला समाप्त होने के बाद भी शहर की सेवा करता रहेगा।

प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से 'पीएम-किसान' योजना का शुभारंभ किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज गोरखपुर से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना का शुभारंभ किया।

आज के इस शुभारंभ के साथ, चयनित लाभार्थी किसानों के बैंक खाते में सीधे तौर पर 2000 रूपये की पहली किस्त जमा कराई जाएगी।

प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के शुभारंभ के लिए किसानों को बधाई दी। श्री मोदी ने दूध उत्पादन और मछली पालन के काम में लगे किसान परिवारों को भी बधाई दी, क्योंकि अब किसान क्रेडिट कार्ड तक उनकी पहुंच है।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे इतिहास में यह दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि देश की आजादी के बाद किसानों के लिए सबसे बड़ी योजना आज शुरू हुई है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार किसानों को समर्थ और सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने में उन्हें सक्षम बनाने के उद्देश्य से किसानों को सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए सरकार कार्यरत है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पीएम-किसान योजना से लगभग 12 करोड़ किसान को लाभ मिलने की संभावना है। उन्होंने कहा कि इस योजना के माध्यम से प्रत्येक वर्ष किसानों के बैंक खातों में 75,000 करोड़ रूपये जमा कराए जाएंगे। उन्होंने राज्य सरकारों से आग्रह करते हुए कहा कि वे जल्द से जल्द लाभार्थी किसानों की सूची केंद्र सरकार के पास भेज दें, जिससे किसानों को समय से इस योजना का लाभ मिल सके।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछली सरकारों द्वारा समय-समय पर ऋण माफी की घोषणा से किसानों को दीर्घकालिक अथवा व्यापक तौर पर राहत नहीं मिलती थी।